बिलट महथा आदर्श महाविद्यालय, बहेड़ी

(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

वर्ग : स्नातक तृतीय खण्ड									पृष्ठ : 01.		दिनांक : 09.09.2020
प्रतिष्ठा	✓	अनुषंगिक	X	अनुपूरक	X	रा०भा० हिन्दी	X	अहिन्दी	X	हिन्दी	पत्र : VIII
व्याख्यान का विषय : विलियम वर्ड्सवर्थ के साहित्य सम्बंधी विचारों की समीक्षा.											
प्राध्यापक : डॉ. उमेश कुमार.											

— क्रमशः से आगे.

गद्य भाषा के समर्थन में वर्ड्सवर्थ तर्क देते हैं कि दोनों भाषाओं की अभिव्यंजना करने वाली इन्द्रियाँ तथा दोनों को ग्रहण करने वाली इन्द्रियाँ एक ही है और इनकी रुचि भी परस्पर समान ही होती है।

लिरिकल बैलड्स (Lyrical Ballads) में वर्ड्सवर्थ ने ग्राम्य भाषा का प्रयोग किया है। इसके अलावे उन्होंने किसी भी पुस्तक में ग्राम्य अथवा सामान्य जन की भाषा का प्रयोग नहीं किया है। उन्होंने बाद में सुधार और परिवर्द्धन की बात जो कही है कि भाषा 'Selection of the real language of Men' होनी चाहिए, इससे स्पष्ट होता है कि वह सामान्य भाषा को ज्यों-का-त्यों अपनाने के पक्ष में नहीं है, वरन् उसमें चुनाव करना आवश्यक समझते हैं। अतः सरल भाषा से वर्ड्सवर्थ का तात्पर्य अभिव्यक्ति की सरलता से है, जो आडम्बरहीन, स्वाभाविक और सजीव हो तथा पाठक के मन में उलझन अथवा अरुचि उत्पन्न न कर आह्लाद उत्पन्न करे। इसलिए वह भाषा में चुनाव की बात करते हैं, जिससे ग्राम्यत्व एवं शैथिल्य आदि दोषों से यथासंभव बचा जा सके।

वर्ड्सवर्थ कविता को तीव्रतम भावावेग का उच्छलन (Spontaneous overflow of powerful feelings) मानते हैं और यह सदा सत्य है कि भावावेग के समय हृदय से जो भाषा निष्पन्न होती है उसमें स्वाभाविकता, सरलता एवं सजीवता होती है, वहाँ आडम्बर नहीं होता – वह प्रसाद गुण से ओतप्रोत होती है। पर प्रश्न है कि ग्राम्यत्व आदि दोषों से बचने के लिए ही, वर्ड्सवर्थ ने विवेकहीन व्यक्ति का भावोच्छ्वास न मानकर कविता को विचारवान व्यक्ति का भावोच्छ्वास माना है। कॉलरिज ने भी कवि को विवेक युक्त प्राणी माना है।

वर्ड्सवर्थ कविता को छन्दमय मानते हैं। छन्द के कारण ही कवि एक विशिष्ट भाषा का प्रयोग करता है और भाषा के चुनाव की ओर ध्यान देता है। वर्ड्सवर्थ का उद्देश्य भाषा से कृत्रिमता का बहिष्कार करना था। उन्होंने वागाडम्बर के विरुद्ध आवाज उठाई और काव्य-भाषा को एक नवीन द्दष्टि प्रदान की। पुरानी बातों के परिवेश में काव्य को नया रूप दिया और काव्य में 'सत्यम शिवं सुन्दरम' की आवश्यकता पर बल दिया।

वर्ड्सवर्थ के अनुसार काव्य की उपयोगिता यही है कि वह या तो पाठकों के हृदय पर सद्प्रभाव डाले उनका आत्मदर्शन करे या उनकी मानसिक या नैतिक भावनाओं का परिष्कार करे।